

अध्याय सात

संचार

व्यापारिक मार्ग तथा राजमार्ग और वाहनों के प्रकार—नये तथा पुराने

व्यापारिक मार्ग तथा राजमार्ग

मुगलों के अधीन खैराबाद एक महत्वपूर्ण सरकारी का मुख्यालय था तथा नवाबों के अधीन नाजिम का मुख्यालय रहा। इसकी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण अनेक कच्ची सड़कें इस स्थान से निकलकर सभी दिशाओं की जाती हैं। अब गजेटियर (1877, खंड-तीन, पृष्ठ 369) के अनुसार उस समय जिले की मुख्य पक्की सड़कें सीतापुर से बननऊ तथा सीतापुर से शाहजहांपुर जाने वाली सड़कें थीं (अब दोनों राष्ट्रीय राजमार्ग हैं), पहली सड़क (सीतापुर से बननऊ) साढ़े तीस मील तक जिले से होकर जाती थी, जिसका मांजिले क्रमशः जलालपुर (ग्यारह मील), बहादुरपुर (दस मील) तथा जयपारपुर (दस मील) थी तथा दूसरी सड़क (सीतापुर से शाहजहांपुर) तेइस मील जिले से होकर जाती थी, जिस पर विश्राम स्थल सातापुर से साढ़े चौदह मील दूर महाला पर था, और ये सड़कें क्रमशः गोड (जो इस जिले में जनसाधारण में गोन कहलाता है) तथा सरायन नदिया (जिन पर पुल बने हैं) को पार करता है। मुख्य कच्ची सड़कें ये थीं—सीतापुर से लखामपुर जाने वाली सड़क जिसका जिले के भीतर एकमात्र मांजिले सेलूमऊ (सातापुर से दस मील) पर था, यह सड़क किसा नदी को पार नहीं करती थी, सीतापुर से हरदाई जाने वाली सड़क का जिले के भीतर दूरा इकीस मील है तथा इसका मांजिले रामकोट (सात मील) तथा दाधनमऊ (चौदह मील) थी तथा यह सड़क सरायन और पुरइ (जो जिले में पिरई नाम से भी प्रसिद्ध है) नदिया का जिन पर पुल बने थे, पार करता था; सीतापुर से महमूदाबाद और बहराम घाट होते हुए गाडा जाने वाली सड़क की जिले के भीतर कुल लम्बाई सैंतीस मील थी, इसका मांजिले सरायन (आठ मील), बिसवा (तेरह मील) तथा महमूदाबाद (लगभग सत्रह मील) थी, यह सड़क गाड नदी को पार करती थी, पार करता था; सीतापुर से चहलारा घाट होते हुए बहराइच का जाने वाली सड़क लगभग इकतास मील जिले से होकर गुजरती थी, इसका मांजिले सरायन (आठ मील), बिसवा (लगभग तेरह मील), रसूलपुर (ग्यारह मील) तथा चहलारा (ना मील) थी और यह सड़क गाड नदी (जिस पर पुल बना था) और चोका नदी (जिस पर घाट बना था) का पार करता था; सातापुर से लहरपुर होते हुए मल्लनपुर (बहराइच का भी) का जाने वाली सड़क सैंतीस मील जिले से होकर जाती थी, इसका मांजिले कसरली (सात मील), लहरपुर (दस मील), चादा (ग्यारह मील), तम्बार (छः मील) और मल्लनपुर (छः मील) थी, तथा इस सड़क पर गोड, कवाना, धाघरा, ऊल, कथना, चोका तथा गदरिया नदिया पड़ती थी। गाड का छोड़कर इनमें से किसी भी नदी पर पुल नहीं था तथा आवागमन नौघाटा और छिछले घाटा से होता था। सीतापुर से बरगादयाघाट होते हुए मेहदाघाट, जाने वाली सड़क, साढ़े तीस मील इस जिले से होकर जाती थी, इसका मांजिले रामकोट (साढ़े सात मील), मिसारख (आठ मील) तथा बरगादयाघाट (आठ मील) थी तथा यह सड़क सरायन, पुरइ तथा बहटा नदिया, जिन सभी पर पुल थे, को पार करती थी। सीतापुर से नामसार (नामधारण्य) होते हुए सडाली जाने वाली सड़क साढ़े इक्कास मील जिले से होकर जाती थी, इसका मांजिले रामकोट (साढ़े सात मील), मिसारख (आठ मील) तथा नामधारण्य (छः मील) था तथा यह सरायन, पुरइ और बहटा नदिया को पार करता था जिन सभी पर पुल बने हुए थे। सीतापुर से मछरहटा होते हुए नामधारण्य, जाने वाली सड़क पच्चास मील तक जिले से होकर जाती थी, इसका मांजिले कवल मछरहटा (चादह मील) और नामधारण्य (ग्यारह मील) थी तथा इस सड़क पर सरायन और बहटा नदिया पड़ती थी जिन दोनों पर पुल थे; सीतापुर से कस्ता और मताला जाने वाली सड़क, पन्द्रह मील जिले से होकर जाती थी, जिसका मांजिले सादत नगर (चादह मील) तथा भटपुरवा (इड़ मील) थी यह कवल सरायन नदी को पार करती थी जिस पर पुल बना हुआ था। सीतापुर से हरदाई स्थित पहाना तक जाने वाली सड़क, छब्बास मील इस जिले से होकर जाती थी, इसका मांजिले महाला (साढ़े चादह मील) तथा कुल्हाबरनगर (बार मील) थी तथा यह सरायन, पुरइ और कठना नदिया को पार करती थी जिन पर पुल बने हुए थे। बाड़ा से महमूदाबाद तक जाने वाली सड़क कवल उन्नास मील लम्बा था, जिसका मांजिले भांडया (सात मील) और महमूदाबाद (बारह मील) थी।

तब से जिले के यातायात के साधनों में बहुत सुधार हो चुका है। 1904 में सीतापुर-बिसवा सड़क को पक्की किया गया तथा 1909 में इसका बिसवा-जहांगीराबाद भाग, जो पूर्वी निम्न भूमि (शांजर) का रेलवे स्टेशन बिसवा से जुड़ता था, को पक्की किया गया। 1907-08 में हरगाव-लहरपुर सड़क को पक्की किया गया जिससे लहरपुर कस्बा हरगाव रेलवे स्टेशन से जुड़ गया। सीतापुर-लखामपुर सड़क 1910 में तथा सीतापुर-हरदाई सड़क 1927 में पक्की की गयी थी। इन सड़कों के बन जाने से जिले के दक्षिण-पश्चिम तथा कन्द्रीय भागों से यातायात सुगम हो गया।

यातायात के दृष्टिकोण से जिले की पूर्वी निम्न भूमि सबसे खराब है, जिसके मुख्य विकास मार्ग बिसवा तथा लहरपुर हैं। इस क्षेत्र का लगभग सभी नदियां तथा नाले पुल रहित हैं तथा वर्षा ऋतु में कच्ची सड़कें बंकाए हो जाती हैं। कवल लहरपुर-शाहपुर तथा लहरपुर-तम्बार सड़कों पर घाघरा के आर-पार लट्टों के पुल इसका अपवाद हैं। रेलों के बने जाने पर कमलापुर, खैराबाद तथा महमूदाबाद जंक्शन जैसी कई रेल पोषक (फीडर) सड़कें बनाई गयीं।

